अक्षरदात्री माँ श्रीमती वेल्दी होनसिंगर फिशर

रश्मि श्रीवास्तव*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुसार भारत सरकार ने 2022–2027 तक पाँच साल की अवधि के लिए 'न्यू इंडिया लिटरेसी प्रोग्राम' नामक एक केंद्र प्रायोजित योजना शुरू की है, जिसे लोकप्रिय रूप से 'उल्लास' (समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ) के रूप में जाना जाता है। इस योजना का प्राथमिक उद्देश्य 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी वयस्कों को सशक्त बनाना है। शिक्षार्थियों को पढ़ने, लिखने और संख्या ज्ञान कौशल प्राप्त करने में मदद के साथ यह योजना आजीवन सीखने को भी प्रोत्साहित करती है। इसके साथ-साथ जीवन कौशल की समझ से उन्हें समृद्ध बनाती है। वर्षों पूर्व महात्मा गांधी की प्रेरणा से एक विदेशी महिला वेल्दी होनसिंगर फिशर ने भारत में साक्षरता के प्रसार की एक मुहिम चलाई तथा अनूठे शैक्षिक प्रयोग किए। लखनऊ में उन्होंने साक्षरता निकेतन की आधारशिला रखी। संस्था के प्रशासन हेतु उन्होंने 'इंडिया लिटरेसी बोर्ड' की स्थापना की, जोकि वर्तमान समय में वयस्क एवं अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अग्रणी संस्थान है। इस लेख में वेल्दीफिशर के कार्यों के साथ-साथ लिटरेसी हाउस की उपलब्धियों, वर्तमान में साक्षरता एवं शिक्षा के क्षेत्र में दिए जा रहे उसके योगदान का उल्लेख किया गया है।

समृद्ध शैक्षिक विरासत के बावजूद भारत में शिक्षा व्यवस्था उतार चढ़ाव के दौर से गुजरती रही है, इसके साथ भारतीय राजनीतिक घटनाक्रमों ने भारत की शैक्षिक पृष्ठभूमि को भी बाधित किया है। हम देखते हैं कि भारत में ब्रिटिश शासन की अवधि तक देश का एक बहुत बड़ा वर्ग अशिक्षित था। ब्रिटिश सरकार भी वर्ग विशेष की शिक्षा व्यवस्था के प्रति ही कृत संकल्प रही।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है और इसने आने वाली पीढ़ी को संवारने की ओर ध्यान केंद्रित किया है। वर्तमान समय में भारत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत देश की अपनी एक पहचान और अपना अस्तित्व है। इसके लिए हम देश की उन सभी विभूतियों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिनके प्रयास से यह सफलता अर्जित की जा सकी है। इस दिशा में एक प्रमुख नाम है, श्रीमती वेल्दी होनसिंगर फिशर, जिन्होंने शिक्षा के प्रारंभिक चरण अर्थात अक्षर ज्ञान को भारत की सामान्य जनता तक पहुँचाने का काम किया है। हमारी वर्तमान पीढ़ी उनके सहयोग व योगदान से अनभिज्ञ है, परंतु अक्षरज्ञान की जिस सीढ़ी पर चढ़कर आज हम सफलता की ऊँचाई पर पहुँचे हैं, उसके लिए हमें अवश्य ही श्रीमती वेल्दी होनसिंगर

**सह-आचार्य*, (बी.एड.विभाग), महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226018

फिशर के योगदान को स्वीकार करके उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

अक्षरदात्री माँ के नाम से जानी जाने वाली वेल्दी होनसिंगर फिशर का जन्म 18 सितंबर 1879 में न्यूयार्क, अमेरिका में हुआ था। फिशर के पिता का नाम अब्राहम बाकर था। सन् 1900 में स्नातक होने के उपरांत इन्होंने शिक्षण कार्य को अपने कार्यक्षेत्र के रूप में चुना। न्यूयार्क के एक छोटे से विद्यालय रोजबड़ से इन्होंने एक शिक्षिका के रूप में काम करना आरंभ किया। सन् 1906 में उन्होंने बाल्डविन मेमोरियल स्कूल में अपनी सेवाएँ दीं, जोकि चीन के नानयांग में स्थित था। फिशर इस बात की समर्थक थीं कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार से मानव जीवन की कठिनाइयों को समाप्त किया जा सकता है। बाल्डविन मेमोरियल स्कूल में वह प्रधानाध्यापिका के पद पर कार्यरत थीं। उन्होंने विद्यालय की बालिकाओं को समय के साथ आगे बढ़ने व आधुनिक परिवर्तनों के प्रति खूब प्रोत्साहित किया।

वेल्दी फिशर की नियति में भारत देश की पवित्र भूमि पर कार्य करना लिखा था। नियति ने उनका परिचय फ्रेडरिक वॉन फिशर से कराया जो एक विद्वान पादरी होने के साथ-साथ उच्च आदर्श विचारों वाले व्यक्ति थे और कई वर्षों से भारत में सेवा कार्य कर रहे थे। इसके साथ ही भारत में फिशर का परिचय महात्मा गांधी से भी हुआ था। गांधी जी ने उन्हें भारत देश के ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने हेतु प्रेरित किया।[1] गांधी की बुनियादी शिक्षा के विचार तथा रवींद्रनाथ ठाकुर के स्त्री निकेतन के कार्यों से भी वे प्रभावित रहीं।[2] 18 जून 1924 में फ्रेडरिक वॉन फिशर से विवाह करने के पश्चात वेल्दी कलकत्ता में अपने पति के साथ जनसेवा में लग गईं अमेरिका तथा भारत दोनों देशों के बीच काम करते हुए, जब उनके जीवन में सब कुछ सुखद और सामान्य था। उसी बीच सन् 1938 में फ्रेडरिक के निधन ने उन्हें तोड़कर रख दिया। वह अपने जीवन को निरर्थक और दिशाहीन मानने लगीं। इस दौरान वह पुनः भारत आईं और महात्मा गांधी के आग्रह पर इन्होंने अपने जीवन को नई दिशा देने के प्रयास में भारत में जनकल्याण कार्यों में लिप्त हो गईं।

पति की मृत्यु से व्यथित वेल्दी फिशर ने कहा था अकेलेपन ने मुझे एक संदेश दिया। भारत पहुँचने के लिए यात्रा करते समय मेरे सामान में सबसे भारी वस्तु दुःख था। खैर, भारत फिर से मेरा घर बन गया। इस प्रक्रिया ने मेरा हृदय प्रायः तोड़ ही डाला।[3] भारत आकर उनका अकेलापन दूर होने लगा। यहाँ वह लोगों के बीच व्यस्त रहने लगीं। इन सबके बीच उन्हें अपनापन तो मिला ही, साथ ही डॉ. फिशर को अपने अग्रगामी जीवन को व्यतीत करने की दिशा भी मिली।

भारत वापसी पर डॉ. फिशर ने इस बात को भी समझ लिया कि भारत के लगभग सभी गाँव पीड़ित थे। ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वत्र भुखमरी और बेरोज़गारी थी। गाँव में व्यापक रूप में निरक्षता विद्यमान थी। उनके मन में दृढ़ विश्वास था कि अक्षर ज्ञान के बिना ग्रामीण लोगों को साहूकारों, जमींदारों, पुलिस और पटवारी के रूप में विराजमान उदासीन प्रशासन के चंगुल से छुड़ाया नहीं जा सकता था।[4] ये अंग्रेजों के अधीन गुलाम भारत की तस्वीर थी। आजादी के पश्चात के शुरूआती वर्षों में भारत अपने शैक्षिक प्रयासों से आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत था एवं

शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति के प्रयास हो रहे थे। वेल्दी फिशर ने इस काम में अपना योगदान दिया।

13 फरवरी 1953 में डॉ. फिशर ने इलाहाबाद में साक्षरता निकेतन की शुरूआत की। भारत में बड़ी संख्या में निरक्षरों को अक्षर ज्ञान देने के उद्देश्य से उन्होंने प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रमों को प्रारंभ किया। तीन वर्ष तक इलाहाबाद में कार्य करने के पश्चात तत्कालीन राज्यपाल श्री के.एम. मुंशी के बुलावे पर वह लखनऊ आयीं। इलाहाबाद में चलाए जा रहे, अपने साक्षरता कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने लखनऊ-कानपुर रोड, पर लगभग बीस एकड़ जमीन पर 13 सितंबर, 1956 में साक्षरता निकेतन की आधारशिला रखी, संस्था के प्रशासन हेतु उन्होंने 'इंडिया लिटरेसी बोर्ड' (भारतीय शिक्षा परिषद्) की स्थापना की। जो वर्तमान समय में वयस्क और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अग्रणी संस्थान है। 'सन् 1956 में सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत भारत साक्षरता बोर्ड के नाम से इसे पंजीकृत किया गया।'[5] भारत सरकार ने डॉ. फिशर की इन कार्यों में संपूर्ण सहायता की। यह संस्था अपने प्रारंभिक समय में लखनऊ के आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में रात्रि प्रौढ़शालाएँ चलाती रही। समय के साथ आगे चलकर नवसाक्षरों व प्रौढ़ों को अक्षरज्ञान देने के लिए उपयोगी पाठ्य-सामग्री की आवश्यकता को देखते हुए संस्था द्वारा पुस्तकालय भी स्थापित किए गए। साक्षरता निकेतन की स्थापना कर भारतीयों को साक्षर बनाने की पहल करने के कारण डॉ. फिशर को अक्षरदात्री के नाम से जाना जाने लगा। वर्तमान में यह 'साक्षरता निकेतन लिटरेसी बोर्ड।' के नाम से विख्यात है।

इस बोर्ड के मुख्य आधार स्तंभ हैं— कार्यात्मक साक्षरता, खाद्य उत्पादन, पारिवारिक जीवन शिक्षा एवं भय निवारण। संस्था का मुख्य उद्देश्य निरक्षरता को समाप्त कर समाज को ज्ञान के आलोक से प्रदीप्त करना है। फिशर का अमृत वाक्य "अंधकार को क्यों धिक्कारे अच्छा है, एक दीप जलाएँ।" लगभग 20 एकड़ में फैले साक्षरता निकेतन परिसर का निर्माण-योजना एवं बनावट प्रख्यात वास्तुविद लारी बेकर के द्वारा तैयार किया गया था। यह साक्षरता निकेतन परिसर उस समय एक आदर्श शिक्षाग्राम के रूप में पर्यावरण के अनुकूल बनाया गया था। इंडिया लिटरेसी बोर्ड के महत्वपूर्ण कार्य हैं— साक्षरता एवं प्रौढ़ शिक्षा से जुड़े कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण, असाक्षरों व नवसाक्षरों के लिए पठन-पाठन सामग्री का निर्माण एवं प्रकाशन, दक्षता विकास कार्यक्रम, पारिवारिक जीवन एवं जनसंख्या शिक्षा आदि। भारत के अनेक उच्च पदों पर आसीन विशिष्ट जन, शिक्षाविद् व उद्योगपति इस संस्था के संस्थापक मंडल के सदस्य रहे और समय-समय पर अपनी सेवाएँ भी देते रहे हैं।

वर्तमान समय में 'इंडिया लिटरेसी बोर्ड' या 'साक्षरता निकेतन' का परिसर प्रशासनिक भवन, कबीर थियेटर, होस्टल एवं मेस, प्रार्थना भवन, डॉ. वेल्दी फिशर हाउस म्यूजियम, स्कूल ऑफ़ राइटिंग, राज्य संसाधन केंद्र, केंद्रीय पुस्तकालय, साक्षरता संग्रहालय भवन से सुसज्जित हैं और पूर्णत: संचालित हैं। यहाँ स्थापित केंद्रीय पुस्तकालय भवन की स्थापना डॉ. वेल्दी फिशर ने सन् 1970 में स्वयं की थी। इसके भूतल पर विभिन्न विषयों

की लगभग 50,000 पुस्तकों का संग्रह है। प्रथम तल पर वाचनालय है, जो कि डॉ. वेल्दी फिशर की उपलब्धियों के चित्रों से सुसज्जित है। पेड़-पौधों से सुसज्जित लिटरेसी हाउस का ये प्रांगण मानों भारत के प्राचीन परंपरागत शिक्षण संस्थानों को जीवंत करता है। सन् 1959 में इस भवन में पंचायती राज प्रशिक्षण केंद्र का संचालन किया गया, जिसमें ग्राम प्रधानों एवं पंचायतों तथा खंड विकास समितियों के सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। वर्ष1965 में कारखानों एवं मिलों के श्रमिकों के लिए साक्षरता एवं 'प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम' प्रारंभ किया गया। भारत सरकार द्वारा 02 अक्तूबर 1978 में राष्ट्रीय स्तर पर 'प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम प्रशिक्षण मैनुअल, पठन-पाठन की पुस्तकें तैयार करने के साथ-साथ शोध मूल्यांकन के कार्य भी हुए। ये समस्त कार्य डॉ. वेल्दी फिशर के निःस्वार्थ सेवाभाव के परिणाम थे।

"साक्षरता मिशन ने महिला कल्याण अनौपचारिक शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रमों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की थी। इसके अतिरिक्त इस मिशन ने विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा यूनिसेफ, रा.शै.अ.प्र.प. तथा यूनाइटेड नेशंस पॉप्लेशन फंड (यू.एन.एफ.पी.) के साथ मिलकर भी कार्य किया। मिशन ने शैक्षणिक कठपुतली कला, स्क्रीन छपाई, फोटो लेमिनेशन, इमारतों में नल लगाने (प्लबरिंग) की कला और सुलेख कार्य, विद्युत उपकरणों व स्कूटर, मोटर साइकिल की मरम्मत, बाँस, हस्तशिल्प, कृषि की आधुनिक तकनीकों आदि के प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भारत सरकार के युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय मामलों के विभाग से मान्यता अर्जित की। मिशन ने समन्वित जल विकास, राष्ट्रीय स्वैच्छिक सेवा योजना, क्रियात्मक साक्षरता इत्यादि में भी भाग लिया। इसके साथ ही मिशन के द्वारा बालवाड़ी केंद्र तथा किंडरगार्टन की परियोजना भी संचालित की गयी थी।[6] भारत में कृषक व श्रमिक वर्ग साक्षरता की समस्या के समाधान पर विचार करते हुए डॉ. वेल्दी फिशर लिखती हैं— 'श्रमिक वर्ग जिनकी जड़ें ही शिक्षा से दूर थीं और जिनका काम शारीरिक श्रम था, उन तक शिक्षा पहुँचाना हमारे लिए एक बड़ा प्रश्न था। जब भी मैंने इसके संदर्भ में आसान समाधान ढूँढ़ने के प्रयास किए मेरे अंतर्मन से एक ही आवाज़ आई कि सर्वप्रथम उन्हें साहूकारों से मुक्त कराना होगा। मैंने स्वयं से प्रश्न किया कि साहूकारों की लेखा प्रणाली आखिर है क्या?''[7] डॉ. वेल्दी फिशर समझ चुकी थीं कि इस लेखा प्रणाली की सबसे बड़ी समस्या साहूकारों का शिक्षित व श्रमिक वर्ग का निरक्षर होना है। वे इन्हें साक्षर करने हेतु कृत संकल्प हुईं।

डॉ. वेल्दी फिशर को सन् 1968 में 'मैग्सैसे पीस अवॉर्ड' मिला। श्रीमती डॉ. वेल्दी फिशर ने इस धनराशि का प्रयोग किसान विद्यापीठ बिजनौर की स्थापना हेतु किया। इस संस्था को बनाने का उद्देश्य यह था कि ग्रामीण कृषक युवकों को कृषि की वैज्ञानिक जानकारी के साथ-साथ ऊसर भूमि को कृषि योग्य उपजाऊ बनाने की वैज्ञानिक जानकारी प्रदान की जाए। ऊसर भूमि सुधार, उत्तम सिंचाई, उत्तम बीज, कृषि यंत्रों एवं मशीनों की देखभाल तथा रख-रखाव, उर्वरक एवं कीटनाशक दवाईयों के प्रयोग की व्यावहारिक दक्षता प्रदान की

जाए। साथ ही, कृषकों की कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान विशेषज्ञों द्वारा किया जाए। इस संस्था में न केवल आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों के युवक कृषक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे, बल्कि देश के विभिन्न भागों से जैसे बिहार तथा बंगाल से भी युवक कृषक प्रशिक्षण प्राप्त करने आए थे। सन् 1970 में इस संस्था में करीब 90 युवक प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे।[8]

भारत में संचालित इन साक्षरता कार्यक्रमों का अपना अनुभव साझा करते हुए वे लिखती हैं— 'हमने सभी तरह की शिक्षण सहायक सामग्री, खिलौनें, कठपुतली, फ्लालेन बोर्ड के साथ शिक्षण संदर्भ प्रयोग किए। उनकी सफलता को देखकर उनके मिलान से समन्वित शिक्षण किट निर्मित की गई। हमने नवसाक्षरों से उपलब्ध संदर्भित पुस्तकें पढ़ी और ये पाया कि उनमें आधी से भी कम नवसाक्षरों के पढ़ने योग्य थी। यद्यपि उनकी लेखन शब्दावली बड़े बच्चों के लिए कम उपयुक्त थी।

अतः हमने टिन के बॉक्स बनाएँ, जिनमें 50 पुस्तकें रखी जा सकें। हमने इन टिन बॉक्स पुस्तकालयों को लाल, काले, सफेद रंगों से रंगा और साइकिल से गाँवों में पहुँचाने का काम किया। इसके पश्चात हमने साक्षरता किट बनाई जिसमें हमने ब्लैक बोर्ड, चाक, रबर, स्लेट, पेंसिल, अक्षर चार्ट, बेसिक पुस्तकें रखीं। इस किट में भारत में बनाया जाने वाला कैरोसिन लैंप भी सम्मिलित किया गया। इसकी रोशनी ग्रामीण परिवेश में आकर्षक व तीव्र थी। एक साक्षरता किट से हमारा एक शिक्षक 25 बच्चों को एक साथ पढ़ा सकने में सक्षम था।'[9] हर सुबह ध्यान (मेडिटेशन) करने के बाद हम हिंदी भाषा पर काम करते थे। ये गांधी जी की इच्छा थी कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा हो। नेशनल इंस्टीट्यूट नई दिल्ली के परिचय के उपरांत उन्होंने मुझे गाँवों में प्रयोग होने वाले 2000 शब्दों की एक सूची दी जैसे नमक, फल व सब्ज़ी के नाम घर में बोले जाने वाले और भावनाएँ प्रकट करने वाले शब्द।'[10] इन शब्दों को ब्रिटिश शब्दावली तथा टैगोर की नवसाक्षरों के लिए निर्मित फ्लिपबुक से डॉ. वेल्दी फिशर की टीम ने नवसाक्षर शब्द सूची बनाई और इन शब्दों को साक्षरता कार्यक्रमों में शामिल किया। अपने काम में आने वाली बाधाओं का उल्लेख करते हुए वे लिखती हैं— 'मेरे काम में लोगों ने मेरा मनोबल खूब गिराया और बताया कि इन समस्याओं का कोई समाधान नहीं है। अतः क्या ही किया जाए। निर्धन श्रमिक अपने आज के जीवन के सिवा और कुछ जानता ही नहीं। अतः वह अपने वर्तमान को ही सही मानता है।'[11] इन सबके बावजूद वह अपने काम में संलग्न रहीं और सफल भी हुईं। जन शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा व साक्षरता के क्षेत्र में ये फिशर के बड़े ही प्रभावी प्रयोग थे। इन प्रयोगों के माध्यम से भारत के लक्ष्य जन-जन तक शिक्षा के प्रसार को समर्थन प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी के निर्देश का अक्षरशः पालन करते हुए उन्होंने अपना जीवन जनकल्याण को समर्पित कर दिया था। डॉ. फिशर ने शिक्षा को जनकल्याण का सबसे बड़ा साधन मानते हुए वे इसी क्षेत्र में सक्रिय रहीं।

'वे सही मायने में गांधी जी की सच्ची शिष्या थीं। उन्होंने लोगों के साथ संवाद स्थापित करने के लिए थोड़ी हिंदी भी सीख ली थी। साक्षरता सामग्री के थैले को बनाने वाली वे प्रथम व्यक्ति

थीं, जिसमें श्याम पट्ट और लालटेन को भी शामिल किया गया था। दूर-दराज़ गाँवों के लिए डॉ. फिशर ने साइकिलों पर लदे संदूकों में चल पुस्तकालय योजना शुरू की।'[12] यह सभी भारत में साक्षरता के विकास में वे प्रयास थे, जिन्होंने भारत के साक्षरता मिशन को दिशा और गति दोनों प्रदान की थी।

इन सबके साथ डॉ. वेल्दी फिशर एक बड़ी ही दयालु व उदार स्वभाव की महिला भी थीं। सबरवाल (2011) ने उनके विषय मे कहा 'डॉ. वेल्दी फिशर को मैंने हमेशा एक दयालु और उदार महिला पाया। लोगों की भाषा, प्रथाओं तथा आस्थाओं का ज्ञान न होते हुए भी यह सभी उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गईं थीं। ग्रामीण महिलाएँ उन्हें अपना शुभचिंतक और हितैषी समझकर उनकी और आकर्षित हो जाती थीं। डॉ. फिशर ने उनका हृदय जीता और वे उनकी सच्ची मित्र तथा साथी बन गईं। ग्रामीण महिलाएँ हमेशा उन्हें एक मित्र, मार्गदर्शक तथा दार्शनिक के रूप में देखती थीं। वे अपनी निजी समस्याओं के समाधान के लिए उनके पास जाती थीं। डॉ. वेल्दी फिशर उनके प्रति उपदेशक के रूप में नहीं वरन ऐसा व्यवहार करती थीं, मानों वे उनमें से एक ही हैं। वे बच्चों के साथ खेलतीं तथा अज्ञान, निर्धनता, रोग-दु:ख और चिंताओं में डूबी हुई स्त्रियों के विचारों को बाँटती थीं। वे अपनी समस्याओं को हल करने के लिए गंभीरतापूर्वक प्रयास करती थीं। उन्हें पक्का विश्वास हो गया था कि हमारी समस्त सामाजिक बुराइयों की जड़ निरक्षरता है। उन्होंने सबके लिए साक्षरता के मंत्र को सर्वोपरि स्थान दिया था।'[13]

महिला विद्यालय लखनऊ की पूर्व प्राचार्या कंचनलता सबरवाल इस संदर्भ में एक घटना का ज़िक्र करते हुए लिखती हैं— 'गाँवों की सृजनात्मक कलाओं तथा घरेलू उद्योगों में उनकी गहरी रुचि थी। उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं गाँवों के बारे में कुछ अच्छी बात लिखूँ। उन्होंने कहा 'मैं चाहती हूँ कि ग्रामीण महिलाएँ लेखक के सौंदर्य बोध पर आधारित प्रकृति के वरदानों का आनंद उठाएँ।' इस प्रकार वे चाहती थीं कि सीखने की प्रक्रिया किसी अच्छी चीज में स्वैच्छिक भागीदारी की क्रिया बने, न कि महज़ उबाऊ और अप्रिय भार बन कर रह जाएँ।[14] सबरवाल ने डॉ. वेल्दी फिशर के सहज स्वभाव व लोगों में घुलमिल जाने की उनकी कला को करीब से देखा था। तत्संबंधी घटना का ज़िक्र करते हुए वे लिखती हैं— 'महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज लखनऊ में उनके स्वागत का सुयोग प्राप्त हुआ, उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा न था तथापि वे अपने स्वभाव के अनुरूप, मैत्रीपूर्ण, मज़ाकिया और ज़िंदादिल नज़र आयीं। उन्होंने हम सबसे कहा कि हम निरक्षरता निवारण के कार्यक्रम में लग जाएँ। उन्होंने कॉलेज की प्राध्यापिकाओं को अपनी झिझक पूरी तरह तोड़ने के लिए तैयार कर लिया तथा स्वयं नृत्य, स्काउटिंग, संगीत और लयबद्ध ताली बजाने के कुछ सुंदर और आनंददायी कार्यक्रमों में अगुआई की। मुक्त उल्लास के साथ वे बोलीं आओ मिलकर आनंद उठाएँ।'[15] निरक्षरता निवारण कार्यक्रम कार्यों के लिए ग्रामीण नेताओं द्वारा प्रश्न किए जाने पर वे कहा करती थीं कि 'गांधी जी द्वारा की जाने वाली प्रार्थना से शुरू करो, जिसमें सभी धर्मों का सम्मान है। इस प्रार्थना को

प्रतिदिन सुबह काम शुरू करने से पहले दुहराते जाओ,' साक्षरता अभियानों का प्रधान पक्ष अक्षरों से मित्रता का है। अक्षर के आकार-प्रकार से उनकी ध्वनि, उनके संयोजन से बरसों बरस दूर रहे व्यक्ति के लिए ये बड़ी अनोखी और अनजान-सी चीज़ है। डॉ. वेल्दी फिशर ने अनजाने में एक निरक्षर व्यक्ति की दूरी को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया था। ये क्रियाएँ उसी का अंग थीं। डॉ. वेल्दी फिशर का जीवन दर्शाता है कि दुनिया में निरक्षरता के उन्मूलन के लिए काम करने में न तो उम्र, न ही राष्ट्रीयता और न ही कोई नस्ल बाधा है। वे हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।[16] बालपन की क्रियाएँ, बाल मनोभावों में वयस्कों की भागीदारी उन्हें उनके जैसे कार्यों को करने की सहजता प्रदान करती हैं। हम अक्षर ज्ञान प्रायः बच्चों का कार्य मानते हैं, तो एक उम्र तक एक व्यक्ति किसी भी कारणवश यदि साक्षर नहीं हो सका हो, तो वह सामान्यतः यही मान बैठता है कि अब यह मेरा काम नहीं है। डॉ. फिशर ने जनसामान्य को इस सोच से ऊपर उठाया। वे उन्हें बताती थीं कि उन्हें जब भी अवसर मिले वे कागज़ कलम हाथ में उठाएँ।

सबरवाल लिखती हैं कि 'वेल्दी एच फिशर की गणना दैव प्रेरित आत्माओं में की जा सकती है। उन्होंने दूर देश के वंचित तथा पीड़ित मनुष्यों को शक्ति व राहत पहुँचाने के लिए आराम की जिंदगी को ठुकरा दिया। उन्होंने विशेषतः महिलाओं की सेवा की, जिन्हें समाज का दुर्व्यवहार यह भूल जाने के लिए विवश कर देता है कि वे भी मनुष्य हैं।'[17] इस तथ्य को स्वीकार करना अजीब लग सकता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका की एक महिला ने भारत में साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण अभियान चलाया, लेकिन यह हकीकत थी।[18] सन् 1964 में उन्हें मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नेहरू साक्षरता पुरस्कार से भी वे सम्मानित की गईं। भारत सरकार ने सन् 1980 में उनके सम्मान में वेल्दी होन सिंगर फिशर डाक टिकट जारी किया। सन् 2002 में वे सरदार पटेल अंतरराष्ट्रीय साक्षरता अवार्ड से भी नवाजी गई।

खेद का विषय है कि हमारा आज का युवा वर्ग अक्षरदात्री माँ के इस योगदान से अनजान है। भारत और विशेषकर उत्तर प्रदेश से उनके लगाव और उनकी उपलब्धियों को लोगों को बताने के लिए राजधानी स्थित उनके आवास को संग्रहालय का रूप दिया जा रहा है। डॉ. वेल्दी फिशर के योगदान को सम्मान देते हुए कुछ नये कदम भी उठाए जा रहे हैं। 'इसके तहत लखनऊ के कृष्णा नगर स्थित 'लिटरेसी हाउस' में साक्षरता के इतिहास को दर्शाने वाला एक संग्रहालय बनाया जाएगा। करीब आठ करोड़ रूपये की लागत से बनने वाले इस संग्रहालय के निर्माण में केंद्र सरकार साढ़े पाँच करोड़ रूपये का सहयोग करेगी। शेष राशि का व्यय 'लिटरेसी हाउस' खुद जुटाएगा।'[19] 'इस संग्रहालय में नव साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता का पूरा इतिहास दर्शाया जाएगा। इस संग्रहायल के जरिए लिटरेसी हाउस को देश के पर्यटन मानचित्र पर लाए जाने के प्रयास किए जाएँगे।'[20] डॉ. फिशर ने कहा भी था कि 'किसी दिन यह संस्था 'मिनी लिटरेसी हाउस' (लघु साक्षरता निकेतन) बनेगी।'[21] उनका यह स्वप्न अवश्य पूरा होगा। निःसंदेह इस प्रकार के प्रयासों से डॉ. वेल्दी फिशर के व्यक्तित्व व कृतित्व को लोग जान सकेंगे। वर्तमान युवा पीढ़ी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर शिक्षा के क्षेत्र को अपना

कार्यक्षेत्र बनाएगी। देश का ऐसा वर्ग जो वर्तमान की अक्षरज्ञान की परिधि तक नहीं पहुँच सका है, उन तक अक्षरों और अंकों की आड़ी तिरछी लकीरों का जादू और इन लकीरों में छिपी अभिव्यक्ति की कला लोगों तक पहुँचाना आवश्यक है। इसके लिए उनका जीवन एक प्रेरणा स्त्रोत है। हमें उनके कार्य को आगे बढ़ाते रहने के प्रयास करने होंगे।

वर्तमान में 'लिटरेसी हाउस' द्वारा साक्षरता एवं शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

लिटरेसी हाउस की स्थापना के बाद वयस्क शिक्षा के पदाधिकारियों को प्रशिक्षण देने का कार्य बड़ी निपुणता से करता आ रहा है। इसके साथ-साथ निरक्षरों तथा नवसाक्षरों के लिए सामग्री का विकास करना, अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन आयोजित करना, युवाओं के लिए कौशल विकास पाठ्यक्रम आयोजित करना, जनसंख्या और शिक्षा कार्यक्रमों के विकास सहित पारिवारिक जीवन शिक्षा गतिविधियाँ चलाना आदि के लिए यह संस्था निरंतर कार्यरत रही है। यह संस्था भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं को तैयार करने के लिए प्रसिद्ध है। नेपाल, अफगानिस्तान, फिलीपींस, मलावी, सोमालिया, फिजी, श्रीलंका आदि विकासशील देशों के पेशेवर तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी इस संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया।

भारत सरकार द्वारा 'प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित करने, राज्य, जिला और ग्राम स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा के राष्ट्रीय कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए कार्यबल को प्रशिक्षित करने हेतु प्रथम 'प्रौढ़ शिक्षा संसाधन केंद्र' के रूप में भी इसे मान्यता दी गई। वयस्क एवं सतत शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, जनसंख्या एवं विकास शिक्षा, पंचायती राज, युवा विकास गतिविधियों आदि के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री के प्रकाशन में लिटरेसी हाउस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लिटरेसी हाउस ने अपने छह दशकों के सफर में विशेष रूप से नव-साक्षरों के लिए बड़ी संख्या में पोस्टर, पैम्फलेट, नारे और 500 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। लिटरेसी हाउस में अपने संस्थापक के नाम पर एक सह-शिक्षा विद्यालय भी स्थापित है, जिसका नाम 'वेल्दी फिशर चिल्ड्रेंस एकेडमी' है। ये संस्थान अपने परिसर में हाई स्कूल तक की शिक्षा प्रदान करता है। यह विद्यालय उत्तर प्रदेश बोर्ड से मान्यता प्राप्त है। राज्य संसाधन केंद्र, उत्तर प्रदेश और तीन जन शिक्षण संस्थान अर्थात कानपुर, लखनऊ एवं देहरादून तथा एक सूचीबद्ध प्रशिक्षण संस्थान (ई.टी.आई.) भी साक्षरता सदन के तत्वावधान में कार्य कर रहे हैं।

संदर्भ

1 टॉम स्टिच. 2004. *लिटरेसी फ्रीज़ द वर्ड:विज़न आफ़ द फ़्यूचर थ्रू ए प्रिज़्म ऑफ़ द पास्ट*. htpps//en.copin.ca पर देखा गया।

2 केली, कोलीन अडाला. 1983. *डाक्टोरल डिजर्टेशन — द एजूकेशनल फ़िलॉसफ़ी एंड वर्क ऑफ़ वेल्दी होनसिंगर फिशर इन चाइना एंड इंडिया 1906–1980*. https//digital commons lib.uco पर देखा गया।

[3] सुशीला, नैयर और मनकेकर कमला (संपादक). 2011. मित्तल नेमिशरण (अनुवादक). *भारतीय पुनर्जागरण में अग्रणी महिलाएँ*. मानस पर उभरी स्मृतियाँ. पृष्ठ संख्या 69. चौथा संस्करण. नेशनल बुक ट्रस्ट. नई दिल्ली,

[4] वही, पृष्ठ संख्या 70

[5] https// India literacy board. Org .12 अक्तूबर 2024 को प्राप्त किया गया।

[6] सुशीला, नैयर और मनकेकर कमला (संपादक). 2011. मित्तल नेमिशरण (अनुवादक), भारतीय पुनर्जागरण में अग्रणी महिलाएँ, मानस पर उभरी स्मृतियाँ, 2011, पूर्व संदर्भित, पृष्ठ संख्या 73

[7] फिशर, वेल्दी होनसिंगर. 1962. *टू लाइट ए कैंडिल*. पृष्ठ संख्या 222. ब्लूम्सबरी पब्लिकेशन. दिल्ली.

[8] प्रभुदयाल. 1981. *उजाला पत्रिका 102वीं जयंती विशेषांक* सितंबर 1981. पृष्ठ संख्या 7. इंडिया लिटरेसी बोर्ड प्रकाशन, लखनऊ,

[9] फिशर, वेल्दी होनसिंगर. 1962. *टू लाइट ए कैंडिल*. पृष्ठ संख्या 222. ब्लूम्सबरी पब्लिकेशन.

[10] वही, पृष्ठ संख्या 221

[11] वही, पृष्ठ संख्या 223

[12] सुशीला, नैयर और मनकेकर कमला (संपादक). 2011. मित्तल नेमिशरण (अनुवादक). *भारतीय पुनर्जागरण में अग्रणी महिलाएँ*. मानस पर उभरी स्मृतियां. 2011. पूर्व संदर्भित, पृष्ठ संख्या 74

[13] वही, पृष्ठ संख्या 71–72

[14] वही, पृष्ठ संख्या 71

[15] वही, पृष्ठ संख्या 71

[16] सीतारामबाई, एन. 1927. *वेल्दी होनसिंगर फिशर द फस्ट लेडी ऑफ़ लिटरेसी*. https//www. wisdomlib. org/history compilation/triveni-journal/a doc 73680.ntml

[17] सुशीला, नैयर और मनकेकर कमला (संपादक). 2011. मित्तल नेमिशरण (अनुवादक), *भारतीय पुनर्जागरण में अग्रणी महिलाएँ*. मानस पर उभरी स्मृतियाँ. 2011. पूर्व संदर्भित, पृष्ठ संख्या 69

[18] बाई. एन सीताराम, 1927, वेल्दी होनसिंगर फिशर. द फस्ट लेडी ऑफ़ लिटरेसी, https//www. wisdomlib. org/ history compilation/triveni-journal/a doc 73680.ntml

[19] 'लिटरेसी हाउस में बनेगा साक्षरता संग्रहालय, पर्यटन मानचित्र पर आएगा' *हिंदुस्तान*, दैनिक समाचार पत्र, htpps //www.line Hindustan.com 8 जुलाई 2023 को देखा गया।

[20] वही

[21] सिंह, उद्धृत मदन. 1981. *उजाला पत्रिका 102वीं जयंती विशेषांक*, सितंबर 1981. पूर्व संदर्भित, पृष्ठ संख्या 12